IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

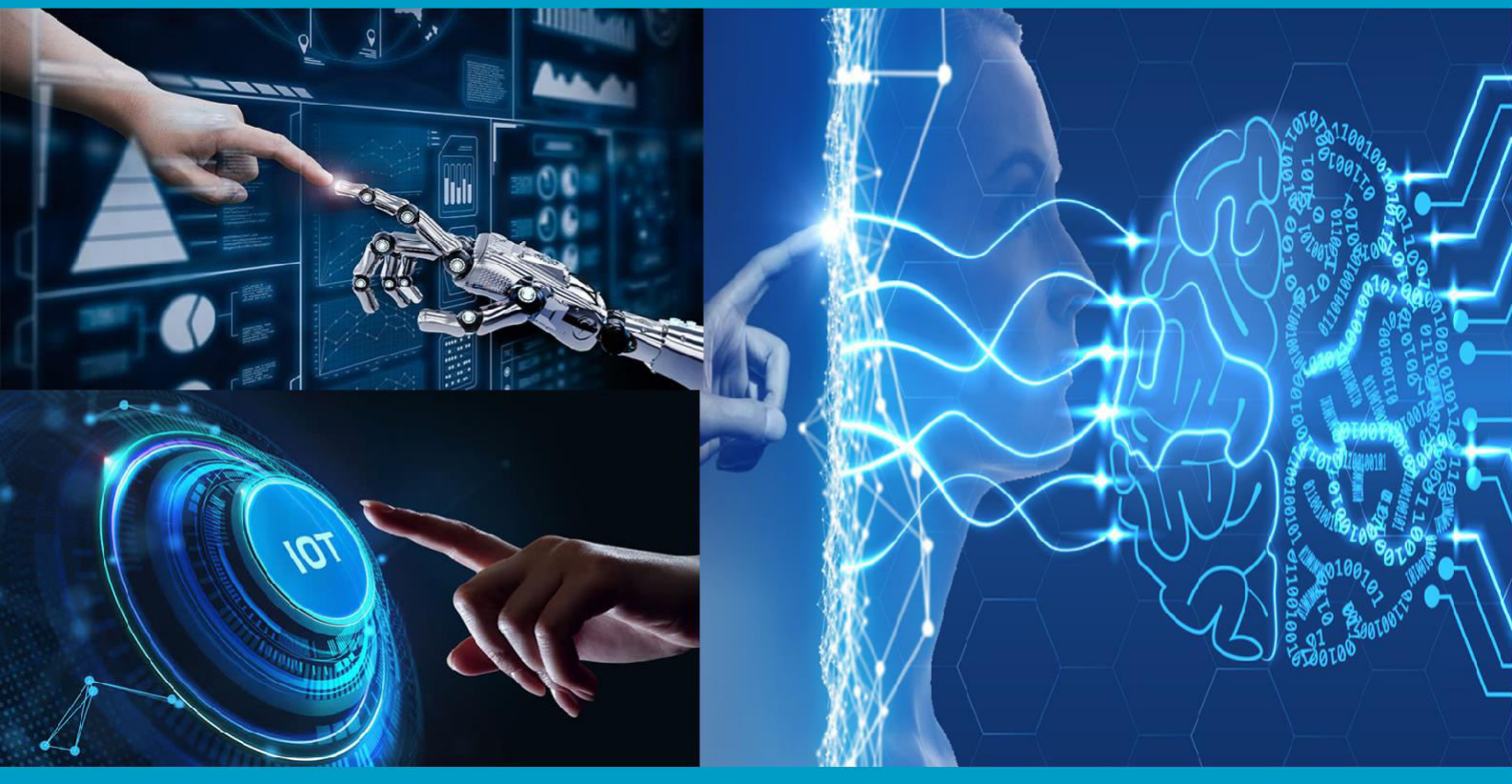

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 11, November 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 9, Issue 11, November 2022 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2022.0811029 |

सिद्धों की दार्शनिक तथा धार्मिक मान्यताओं और धारणाओं का अध्ययन

DR. YASHWANT SHAURYA

ASSISTANT PROFESSOR, HEAD OF DEPT. OF HISTORY, MAULANA AZAD UNIVERSITY, BUJHAWAR, JODHPUR, RAJASTHAN, INDIA

सार

हिंदी साहित्य परंपरा में सिद्ध साहित्य का महत्वपूर्ण योगदना रहा है। सिद्ध साहित्य ने भ क्तिकाल की सगुण और निर्गुण दोनों धाराओं को प्रभावित किया। सिद्धों का सम्बन्ध बौद्ध धर्म की बज्रयानी शाखा से है। ये भारत के पूर्वी भाग में सक्रिय थे। इनकी संख्या 84 मानी जाती है जिनमें सरहप्पा, शवरप्पा, लुइप्पा, डोम्भिप्पा, कुक्कुरिप्पा आदि मुख्य हैं। सर हप्पा प्रथम सिद्ध कवि थे। इन्होंने जातिवाद और बाह्याचारों पर प्रहार किया। देहवाद का महिमा मण्डन किया और सहज साधना पर बल दिया। ये महासुखवाद द्वारा ईश्वरत्व की प्राप्ति पर बल देते हैं।

परिचय

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार -
चूंकि जैनियों, सिद्धों, नाथों की रचनाएं धार्मिक भावना में लिखी गई थीं इसलिए साहित्य के मूल्य तक नहीं पहुंचती थीं। इसलिए उन्हें प्रथम काल की साहित्यिक परिधि में सम्मि लित नहीं किया गया। [1]
बौद्ध धर्म के वज्रयान तत्व का प्रचार करने के लिए जो साहित्य देश भाषा (जनभाषा) में लिखा गया वही सिद्ध साहित्य कहलाता है। यह साहित्य बिहार से लेकर असम तक फै ला था। राहुल संकृत्यायन ने 84 सिद्धों के नामों का उल्लेख किया है जिनमें सिद्ध 'सरह पा' से यह साहित्य आरम्भ होता है। बिहार के नालन्दा विद्यापीठ इनके मुख्य अड्डे माने जाते हैं। बाद में यह 'भोट' देश चले गए। इनकी रचनाओं का एक संग्रह महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने बांग्ला भाषा में 'बौद्धगान - ओ - दोहा' के नाम से निकाला। सिद्धों की भाषा में 'उलटबासी' शैली का पूर्व रुप देखने को मिलता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सिद्ध साहित्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि, "जो जनता तात्कालिक नरेशों की स्वेच्छाचारिता, पराजय त्रस्त होकर निराशा के गर्त में गि री हुई थी, उनके लिए इन सिद्धों की वाणी ने संजीवनी का कार्य किया। साधना अवस्था से निकली सिद्धों की वाणी 'चरिया गीत / चर्यागीत' कहलाती है। [2]
हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि –
"धार्मिक प्रेरणा या आध्यात्मिक उपदेश होना काव्यत्व का बाधक नहीं समझा जाना चाहिए "[3]
सिद्ध साहित्य को मुख्यतः निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है :-
(१) नीति या आचार संबंधित साहित्य
(२) उपदेश परक साहित्य
(३) साधना सम्बन्धी या रहस्यवादी साहित्य

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 9, Issue 11, November 2022 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2022.0811029 |

सिद्ध सरहपा (सरहपाद, सरोजवज्र, राहुल भ्रद्र) से सिद्ध सम्प्रदाय की शुरुआत मानी जाती है। यह पहले सिद्ध योगी थे। जाति से यह ब्राह्मण थे। राहुल सांकृत्यायन ने इनका जन्म काल 769 ई. का माना, जिससे सभी विद्वान सहमत हैं। इनके द्वारा रचित बत्तीस ग्रंथ ब ताए जाते हैं जिनमे से 'दोहाकोश' हिन्दी की रचनाओं मे प्रसिद्ध है। इन्होने पाखण्ड और आडम्बर का विरोध किया तथा गुरू सेवा को महत्व दिया।

इनके बाद इनकी परम्परा को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख सिद्ध हुए हैं क्रमश: इस प्रकार हैं :-

शबरपा : इनका जन्म 780 ई. में हुआ। यह क्षत्रिय थे। सरहपा से इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया । 'चर्यापद' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। इनकी कविता का उदाहरण देखिये -

हेरि ये मेरि तइला बाड़ी खसमे समतुला
षुकड़ये सेरे कपासु फुटिला।
तइला वाड़िर पासेर जोहणा वाड़ि ताएला
फ़िटेली अंधारि रे आकासु फुलिआ॥

लुइपा : ये राजा धर्मपाल के राज्यकाल में कायस्थ परिवार में जन्मे थे। शबरपा ने इन्हें अपना शिष्य माना था। चौरासी सिद्धों में इनका सबसे ऊँचा स्थान माना जाता है। उड़ीसा के तत्कालीन राजा और मंत्री इनके शिष्य हो गए थे।

डोम्भिया : मगध के क्षत्रिय वंश में जन्मे डोम्भिया ने विरूपा से दीक्षा ग्रहण की थी। इन का जन्मकाल 840 ई. रहा। इनके द्वारा इक्कीस ग्रंथों की रचना की गई, जिनमें 'डोम्बि-गीतिका', 'योगाचर्या' और 'अक्षरद्विकोपदेश' प्रमुख हैं।

कण्हपा : इनका जन्म ब्राह्मण वंश में 820 ई. में हुआ था। यह कर्नाटक के थे, लेकिन बि हार के सोमपुरी स्थान पर रहते थे। जालंधरपा को इन्होंने अपना गुरु बनाया था। इनके लिखे चौहत्तर ग्रंथ बताए जाते हैं। यह पौराणिक रूढ़ियों और उनमें फैले भ्रमों के खिला फ थे।

कुक्कुरिपा : कपिलवस्तु के ब्राह्मण कुल में इनका जन्म हुआ। चर्पटीया इनके गुरु थे। इन के द्वारा रचित 16 ग्रंथ माने गए हैं। [4]

सिद्ध कवियों की रचनाएं -

सरहपा : दोहाकोश, उपदेश गीति, द्वादशोपदेश, डाकिनीगुहयावज्रगीति, चर्यागीति, चित्तकोष अज व्रज गीति । इनके कुल 32 ग्रंथ हैं ।

शबरपा : चर्यापद, सितकुरु, वज्रयोगिनी, आराधन - विधि ।

लुइपा : अभिसमयविभगं, तत्वस्वभाव दोहाकोष, बुद्धोदय, भगवदअमभिसय, लुइपा - गीतिका ।

डोम्भिपा : अक्षरद्विकोपदेश, डोंबि गीतिका, नाड़ीविंदुद्वारियोगचर्या । इनके कुल २१ ग्रंथ हैं ।[1]

कण्हपा : योगरत्नमाला, असबधदृष्टि, वज्रगीति, दोहाकोष, बसंत तिलक, कान्हपाद गीतिका ।

दारिकपा : तथतादृष्टि, सप्तमसिद्धांत, ओड्डियान विनिर्गत - महागयह्यातत्वोपदेश ।

शांतिपा : सुख दुख द्वयपरित्याग ।

तंतिपा : चतुर्योगभावना ।

विरुपा : अमृतसिद्ध, विरुपगीतिका, मार्गफलान्विताव वादक ।

भुसुकपा : बोधिचर्यावतार, शिक्षा - समुच्चय ।

वीणापा : वज्रडाकिनी निष्पन्नक्रम ।

कुकुरिपा : तत्वसुखभावनासारियोगभवनोपदेश, स्रवपरिच्छेदन ।

मीनपा : बाहयतरंबोधिचितबंधोपदेश।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 9, Issue 11, November 2022 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2022.0811029 |

महीपा : वायुतत्व, दोहा गीतिका।
कंबलपाद : असबध दृष्टि, कंबलगीतिका।
नारोपा : नाडपंडित गीतिका, वज्रगीति, ।
गोरीपा : गोरखवाणी, पद - शिष्य दर्शन
आदिनाथ : विमुक्त मर्जरीगीत, हुंकारचित बिंदु भावना क्रम।
तिलोपा : करुणा भावनाधिष्ठान, महा भद्रोपदेश।
इनकी रचनाओं का एक संग्रह महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने बांग्ला भाषा में 'बौद्धगा न - ओ - दोहा' के नाम से निकाला। सिद्धों की भाषा में 'उलटबासी' शैली का पूर्व रुप देखने को मिलता है।
हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सिद्ध साहित्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "जो जनता ता त्कालिक नरेशों की स्वेच्छाचारिता, पराजय त्रस्त होकर निराशा के गर्त में गिरी हुई थी, उ नके लिए इन सिद्धों की वाणी ने संजीवनी का कार्य किया। साधना अवस्था से निकली सिद्धों की वाणी 'चरिया गीत / चर्यागीत' कहलाती है। [5]
सरहपा (769 ई.), शबरपा (780 ई.), भूसुकपा (नवीं सदी), लुइपा (830 ई - शबरपा के शिष्य), विरूपा (9 वीं सदी), डोभ्भिपा (840 ई.), दारिकपा (9 वीं सदी), गंडरिपा (9 वीं सदी), कुकुरिपा (9 वीं सदी), कमरिपा (9 वीं सदी), कण्हपा (820 ई., जालन्धरपा के शि ष्य), गोरक्षपा (9 वीं सदी), तिलोपा (9 वीं सदी)
राहुल सांकृत्यायन ने आदिकाल को सिद्ध सामंत युग कहा है। उनका कहना है कि - राहुल सांकृत्यायन को इस काल में दो प्रवृत्तियां लक्षित होती हुई - सिद्धों की बानी और सामंतों की स्तुति। [6] दरअसल मंत्रों की सिद्धि चाहने वाले सिद्ध कहलाए। सिद्धों का समय 797 ई. से लेकर 1257 ई. तक माना गया है। श्रीपर्वत सिद्धों का प्रधान केंद्र रहा है। सिद्धों के विचारदर्शन के प्रमुख ग्रंथ - साधन समुच्चय, आदिकर्मप्रदीप और मंजुश्री मूलकल्प आदि प्रमुख ग्रंथ श्रीपर्वत पर लिखे गए हैं। सन् 1907 में महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने सर्वप्रथम नेपाल में सिद्ध साहित्य का पता लगाया था।

विचार-विमर्श

सिद्ध साहित्य के इतिहास में चौरासी सिद्धों का उल्लेख मिलता है। सिद्धों ने बौद्ध धर्म के वज्रयान तत्व का प्रचार करने के लिये, जो साहित्य जनभाषा मे लिखा, वह हिन्दी के सिद्ध साहित्य की सीमा मे आता है[2]

सिद्ध सरहपा (सरहपाद, सरोजवज्र, राहुल भ्रद्र) से सिद्ध सम्प्रदाय की शुरुआत मानी जाती है। यह पहले सिद्ध योगी थे। जाति से यह ब्राह्मण थे। राहुल सांकृत्यायन ने इनका जन्मकाल 769 ई. का माना, जिससे सभी विद्वान सहमत हैं। इनके द्वारा रचित बत्तीस ग्रंथ बताए जाते हैं जिनमे से 'दोहाकोश' हिन्दी की रचनाओं मे प्रसिद्ध है। इन्होने पाखण्ड और आडम्बर का विरोध किया तथा गुरू सेवा को महत्व दिया।

इनके बाद इनकी परम्परा को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख सिद्ध हुए हैं क्रमश: इस प्रकार हैं :-

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 9, Issue 11, November 2022 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2022.0811029 |

शबरपा : इनका जन्म 780 ई. में हुआ। यह क्षत्रिय थे। सरहपा से इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। 'चर्यापद' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। इनकी कविता का उदाहरण देखिये-

हेरि ये मेरि तइला बाड़ी खसमे समतुला
षुकड़ये सेरे कपासु फ़ुटिला।
तइला वाड़िर पासेर जोहणा वाड़ि ताएला
फ़िटेली अंधारि रे आकासु फ़ुलिआ॥

लुइपा : ये राजा धर्मपाल के राज्यकाल में कायस्थ परिवार में जन्मे थे। शबरपा ने इन्हें अपना शिष्य माना था। चौरासी सिद्धों में इनका सबसे ऊँचा स्थान माना जाता है। उड़ीसा के तत्कालीन राजा और मंत्री इनके शिष्य हो गए थे।

डोम्भिया : मगध के क्षत्रिय वंश में जन्मे डोम्भिया ने विरूपा से दीक्षा ग्रहण की थी। इनका जन्मकाल 840 ई. रहा। इनके द्वारा इक्कीस ग्रंथों की रचना की गई, जिनमें 'डोम्बि-गीतिका', 'योगाचर्या' और 'अक्षरद्विकोपदेश' प्रमुख हैं।[3]

कण्हपा : इनका जन्म ब्राह्मण वंश में 820 ई. में हुआ था। यह कर्नाटक के थे, लेकिन बिहार के सोमपुरी स्थान पर रहते थे। जालंधरपा को इन्होंने अपना गुरु बनाया था। इनके लिखे चौहत्तर ग्रंथ बताए जाते हैं। यह पौराणिक रूढ़ियों और उनमें फैले भ्रमों के खिलाफ थे।

कुक्कुरिपा : कपिलवस्तु के ब्राह्मण कुल में इनका जन्म हुआ। चर्पटीया इनके गुरु थे। इनके द्वारा रचित 16 ग्रंथ माने गए हैं।

परिणाम

"बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा से जो साहित्य देशभाषा में लिखा गया वही सिद्ध साहित्य(Siddh Sahitya) कहलाता है।" बौद्ध धर्म विकृत होकर वज्रयान संप्रदाय के रूप में देश के पूर्वी भागों में फैल चुका था बिहार से लेकर आसाम तक यह फैले थे। बिहार के नालंदा और तक्षशिला विद्यापीठ इनके प्रमुख अड्डे माने जाते हैं।

इन बौद्ध तांत्रिकों में वामाचार की गहरी प्रवृत्ति पाई जाती थी।

राहुल सांकृत्यायन ने 84 सिद्धों के नामों का उल्लेख किया है। यह सिद्ध अपने नाम के अंत में आदर के रूप मे 'पा' शब्द का प्रयोग करते थे

जैसे : सरहपा, लुईपा

"सिद्धों की भाषा संध्या भाषा के नाम से पुकारी जाती है जिसका अर्थ होता है कुछ स्पष्ट और कुछ अस्पष्ट

"मुनि अद्वय वज्र तथा मुनिदत्त सूरी ने कहा है। बौद्ध- ज्ञान -ओ -दोहा नाम से हरप्रसाद शास्त्री ने इनका संग्रह प्रकाशित करवाया।

सिद्ध साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ :[4]

- इस साहित्य में तंत्र साधना पर अधिक बल दिया जाता था।
- जाति प्रथा और वर्ण भेद व्यवस्था का विरोध किया गया।
- वैदिक धर्म का खंडन किया गया।
- सिद्धो में पंचमकार की दुष्प्रवृत्ति देखने को मिलती है मांस,मछली, मदिरा,मुद्रा और मैथुन

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 9, Issue 11, November 2022 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2022.0811029 |

राहुल सांकृत्यायन ने 84 सिद्धों के नामों का उल्लेख किया है जिनमें सिद्ध सरहपा से यह साहित्य आरंभ होता है। सिद्धो की भाषा में उलट भाषा शैली का पूर्व रूप देखने को मिलता है जो आगे चलकर कबीर मे देखने को मिला।

सिद्ध साहित्य के प्रमुख कवि

सरहपा

⇒ सरहपा को हिन्दी का पहला कवि माना गया है।
⇒ इनका समय 769 ई.माना जाता है।
⇒ यह जाति से ब्राह्मण माने जाते हैं।
⇒ इन्हें सरहपाद,सरोज वज्र, राहुल भद्र आदि नामों से भी जाना जाता है।
⇒ इनके द्वारा रचित कुल 32 ग्रंथ थे।
⇒ जिनमें से दोहाकोश सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है।
⇒ दोहाकोश का संपादन प्रबोध चंद्र बागची ने किया।
⇒ डॉक्टर बच्चन सिंह के अनुसार :- "आक्रोश की भाषा का पहला प्रयोग सरहपा में ही दिखाई देता है।"
⇒ सरहपा को सहज यान शाखा के प्रवर्तक भी कहा जाता है।
⇒ सहजिया संप्रदाय के प्रवर्तक सरहपा माने जाते हैं।
⇒ यह पाल शासक धर्मपाल के समकालीन थे।[5]

शबरपा

⇒ यह सरहपा के शिष्य माने जाते हैं।
⇒ इनके गुरु सरहपा माने जाते हैं।
⇒ लूईपा इनके शिष्य माने जाते है।
⇒ चर्यापद, महामुद्रा वज्र गीति, वज्र योगिनी साधना इनके प्रमुख ग्रंथ हैं।
⇒ चर्यापद एक प्रकार का गीत है जो सामान्यतः अनुष्ठानों के समय गाया जाता है।

लूईपा

⇒ यह सरहपा के शिष्य थे।
⇒ 84 सिद्धों में इनका स्थान सबसे ऊंचा माना जाता है
⇒ इनका ग्रंथ लूईपादगीतिका है
⇒ इनकी साधना का प्रभाव देखकर उड़ीसा के राजा दारिकपा इनके शिष्य हो गए

डोम्भिपा

⇒ यह मगध के क्षत्रिय थे।
⇒ इनके ग्रंथों की संख्या 21 है
⇒ डोम्बिगीतिका, योगचर्या अक्षरद्विकोपदेश इनकी प्रमुख रचनाएँ है

निष्कर्ष

कन्हपा

⇒ यह सिद्धो में सर्वश्रेष्ठ विद्वान तथा सबसे बड़े कवि थे।
⇒ इनका जन्म कर्नाटक के ब्राह्मण परिवार में हुआ।
⇒ कणहपा पांडित्य और कवित्व के बेजोड़ थे –राहुल सांकृत्यायन
⇒ इन्होंने जालंधरपा को अपना गुरु बनाया।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 9, Issue 11, November 2022 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2022.0811029 |

कुक्कुरिपा
⇒ इनके गुरु चर्पटिया थे
⇒ इनका ग्रंथ योगभावनोपदेश था।[6]

संदर्भ

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 8, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. https://hi.wikipedia.org/wiki
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य का आदिकाल, पृ. 11, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. https://vimisahitya.wordpress.com/
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य का आदिकाल, पृ. 23, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. राहुल सांकृत्यायन, हिंदी काव्यधारा, पृ. 45, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com